PRESIDENCY COLLEGE
(AUTONOMOUS)
AFFILIATED TO BENGALURU CITY UNIVERSITY, APPROVED BY AICTE, DELHI & RECOGNISED BY THE GOVT. OF KARNATAKA
RE-ACCREDITED BY NAAC WITH 'A+' GRADE

22X201.1H

REG NO: | | | | | | | | |

END TERM EXAMINATION DECEMBER 2022
BA/ BCA/ BBA/ BCOM - I SEMESTER
GH101.1H/ GC201.1H/ GA301.1H/ GB401.1H: HINDI

Duration: 2 Hours **Max Marks: 60**

विभाग–अ

किन्हीं आठ प्रश्नों का उत्तर लिखिए:– (8 X 2 = 16)

1. याग्य–अयोग्य और भले–बुरे की पहचान कैसे होती है?
2. अयादुरै सोलामेन ने कौन सी शक्तिशाली ताकतों के बारे में बताया है?
3. किसकी सलाह पर गिरगिट ने क्या खाया?
4. गिल्लू को खाने में कौनसी दो चीजें अधिक पसंद थी?
5. रतनसिंह के यहाँ काम करनेवाले दो नौकर कौन कौन थे?
6. कालिन्दी को मायके में किस नाम से बुलाते थे और शादी के बाद उसका नाम क्या रखा जाता है?
7. कुरूक्षेत्र युद्ध में अधिकांश वीर किसके पक्ष मे थे और जीत किसकी हुई?
8. निर्धन आरै दुर्बल व्यक्ति के लिए कौन महान होता है?
9. 'उप ' और 'अभि' उपसर्गो को जोडकर दो–दो शब्द बनाइए?
10. 'न ' और 'ई 'उपसर्गो को जोडकर दो–दो शब्द बनाइए?

विभाग–आ

किन्हीं दो अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:– (2 X 6 = 12)

1. "जिन्दगी की सबसे बडी सफलता हिम्मत है, आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।"
2. "अब ब्याह हो जाय चाहे बच्चे, हमारी तो यह हप्पो बिटिया ही रहेगी, है न।"
3. "भाषा और सामाजिक व्यवस्था का घनिष्ठ संबध है।"

किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए:– (2 X 6 = 12)

4. अब्दुल कलाम के शिक्षक।
5. गिरगिट का सपना।
6. कालिन्दी।

विभाग–ड

किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए: (2 X 10 = 20)

1. "सुहाग की साडी" पाठ का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए:–
2. "अक्रोध के द्वारा क्रोध पर विजय लाभ करो"– बुद्धदवे निबंध के आधार पर इस कथन का स्वष्टीकरण कीजिए।
3. गिल्लू पाठ का साराशं लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. निम्नलिखित गद्यांश का उचित शीर्षक देते हुए संक्षिप्तीकरण कीजिए:–

मनुष्य जीवन की सबसे बडी सिद्धि अपने अह के सम्पूर्ण त्याग मे है। जहाँ वह शद्धु समर्पण के उदात्त भाव से प्रेरित होकर अपने 'स्व' का त्याग करने का पस्तुत होता है वहीं उसके व्यक्तित्व की महानता परिलक्षित होती है। साहित्यानुरागी जब उच्च साहित्य का रसास्वादन करते समय स्वयं की सत्ता को भुला कर पात्रो के मनोभावों के साथ एकत्व स्थापित कर लेता है तभी उस साहित्यानन्द की दुर्लभ मुक्तामणि प्राप्त होती है। भक्त जब अपने आराध्य देव के चरणो में अपने 'आप' का अर्पित कर देता है और पूर्णतः प्रभु की इच्छा में अपनी इच्छा का लय कर देता है तभी उसे प्रभु–भक्ति की अलभ्य पूँजी मिलती है। यह विचित्र विरोधाभास है कि कुछ आरै प्राप्त करने के लिए स्वयं का भलू जाना ही एकमात्र सरल आरै सुनिश्चित उपाय है। यह अत्यन्त सरल दिखने वाला उपाय अत्यन्त कठिन भी है। भौतिक जगत मे अपनी क्षुद्रता को समझते हुए भी मानव–हृदय अपने अस्तित्व के झूठे अहकांर मे डूबा रहता है उसका त्याग कर पाना उसकी सबसे कठिन परीक्षा है। किन्तु यही उस व्यक्तित्व की चरम उपलब्धि भी है। दूसरे का निःस्वार्थ प्रेम करने के लिए अपनी इच्छा–आकांक्षाओं और लाभ–हानि का भलू कर उसके प्रति सर्वस्व समर्पण ही एकमात्र माध्यम है। इस प्राप्ति का अनिवचनीय सुख वही चख सकता है जिसने स्वयं का देना–लटुना जाना हो। इस सर्वस्व समर्पण स उपजी नैतिक आरै चारित्रिक दृढता, अपूर्व समृद्धि और परमानन्द का सुख वह अनुरागी चित्त ही समझ सकता है।

*****